रामो राम रटे तो तेरा ,माया जाल कटे तो निंद्रा.
बेच दयु कोई ले तो, ये निंद्रा बेच दयु कोई ले तो।।

भाव राख सत्संग में जाओ,
चित में राखो चेतो ।
हाथ जोड़ चरना में लिपटु,
जे कोई सन्त मिले तो ।।1
निंद्रा बेच दयु कोई ले तो

पाई की मन पाँच बेच दयु,
जे कोई ग्राहक हो तो ।
पांचा मे से चार छोड़ दयु ,
दाम रोकड़ा दे तो ।। 2

के तो जावो राज द्वारे ,
के रसिया रस भोगी ।
म्हारो पीछो छोड़ बावली ,
म्हे ह रमता योगी ।।3

कहे भरतरी सुन ये निंद्रा ,
यंहा नही तेरा वासा ।
म्हे तो म्हारे गुरु भरोषे ,
राम मिल्न की आशा ।।4

निंद्रा बेच दयु कोई ले तो ,
रामो राम रटे तो तेरा ,
माया जाल कटे तो निंद्रा.
बेच दयु कोई ले तो,
ये निंद्रा बेच दयु कोई ले तो।।

बोल नाथ जी महाराज की जय हो ।
बोल शंकर भगवान की जय हो